THE CRISIS IS IN HUMAN CONSCIOUSNESS

History seems to be the story of man-made catastrophes, and these seem to occur regularly, repeatedly and unfailingly, always taking the world by shock and surprise, disproving all the predictions and promises of the pundits and experts, setting at naught the calculations of the intellect, defying logic and reason, and leaving human beings feeling baffled and helpless. Between one crisis and the next lies what we call our normal life. In that so-called normal life we give our time and energy to everything except serious reflection on the purpose of human existence in general and our life in particular. We never ask whether our everyday individual life is itself not a disaster and the cause of the next global crisis. The question may never occur to us and, if even it does, we dare not face it.

This is precisely the challenge that J. Krishnamurti throws at us—make us face a number of unpleasant and disturbing questions, some of which are given here as excerpts from his talks and writings of nearly five decades.

ऐसा लगता है कि इतिहास जैसे आदमी द्वारा लाई गई तबाहियों और बरबादियों की एक कहानी हो, जो कहीं थमती नज़र नहीं आती, बार-बार बिना चूके ख़ुद को दोहराए चली जाती है, और हर बार संसार को अचानक ही आ दबोचती है और वह हैरानी में मुँह बाए खड़ा देखता ही रह जाता है, माहिरों और विद्वानों के तमाम वायदे और भविष्यवाणियां धरी की धरी रह जाती हैं, सब हिसाब-किताब, बुद्धि, तर्क-दलील कुछ काम नहीं आता, आदमी ख़ुद को पूरी तरह बौखलाया हुआ और असहाय सा महसूस करता है| एक संकट और दूसरे संकट के बीच जो फ़ासला है बस उसी को हम अपना आम जीवन कहते हैं| इस कथित आम जीवन में हम हर चीज़ में अपनी ऊर्जा और समय खपत करते हैं लेकिन इस चीज़ को ले कर कभी गंभीरता से विचार नहीं करते कि आखिर मानवीय जीवन का और ख़ुद हमारे अपने जीवन का मतलब क्या है| हम कभी यह सवाल नहीं उठाते कि क्या हमारी ख़ुद की रोज़ाना की ज़िंदगी अपने आप में ही एक बरबादी नहीं है, संसार के आने वाले संकट के बीज क्या उसी में नहीं छुपे हैं| हो सकता है यह सवाल कभी हमारे सामने खड़ा ही ना हुआ हो, और अगर कभी आया भी हो, तो हमने उसका सामना करने की हिम्मत ही ना की हो|

यही तो वह चुनौती है जो कृष्णमूर्ती हमारे सामने खड़ी करते हैं और मजबूर करते हैं कि हम परेशान करने और चुभने वाले इन बेशुमार सवालों का सामना करें, ऐसे ही कुछ सवाल यहाँ पर दिए गए हैं, जिन्हें करीब-करीब पचास साल के वकफ़े की उनकी वार्ताओं और लेखन में से लिया गया है|

THE CRISIS IS IN HUMAN CONSCIOUSNESS	**संकट के बीज तो मनुष्य की चेतना में पड़े हैं**
[When] human beings have cut themselves off from the sacredness of life	(जब) मनुष्य ने जीवन की पवित्रता से ख़ुद को अलग कर लिया
The present world crisis is of an extraordinary nature; there have been probably few such catastrophes in the past. This present crisis is not the usual	संसार का मौजूदा संकट अपने आप में बिलकुल अनूठा है; अतीत में शायद ही ऐसे कुछ संकट पहले रहे हों| मौजूदा संकट कोई आम किस्म की तबाही नहीं है जो

kind of disaster that occurs so often in the life of man. This chaos is world-wide; it is not Indian or European but stretching out into every corner of the world. Physiologically and psychologically, morally and spiritually, economically and socially, there is disintegration and confusion. We are standing on the edge of a precipice and wrangling over our petty affairs. Few seem to realize the extraordinary character of this world crisis, how profound and vastly disturbing. Some, realizing the confusion, are active in rearranging the pattern of life on the edge of the precipice and, being themselves confused, are only bringing more confusion....The intellectual professionals, the specialists, will never save the world; and the intellect, which is only a part of the total process of man, will always fail as its answers are ever partial and so not true. *Madras, 22 October 1947.*	आदमी के जीवन में घटती ही रहती है| यह उथल-पुथल तो पूरी दुनिया में मची है; यह भारतीय या यूरोप की नहीं है बल्कि दुनिया के हर कोने में अपने पाँव पसार रही है| जिस्मानी तौर पर और मानसिक तौर पर भी, नैतिक, रूहानी, सामाि◌ज, आर्थिक हर तरह से उलझाव और अलगाव फैलते जा रहे हैं| हम एक गहरी खाई के किनारे खड़े हैं और अपनी छोटी-छोटी बातों को लेकर लड़-झगड़ रहे हैं| यह संसार संकट कितना गहरा है और किस हद तक परेशान कर देने वाला, बहुत थोड़े ही लोग इसे समझते हुए नज़र आ रहे हैं| कुछ हैं जो इस उलझाव को महसूस करते हुए, उसी खाई के किनारे ही जीवन के ढंग-तरीकों को नए सिरे से जमाने में जुटे हैं, क्योंकि वह ख़ुद उलझन में है, इसलिए और ज़्यादा उलझने ही खड़ी कर रहे हैं| बुद्धिजीवी, माहिर और पेशेवर लोग इस संसार को हरगिज़ नहीं बचा पाएंगे; और बुद्धि, जो कि पूरी मानवीय प्रक्रिया का महज एक हिस्सा ही है, हमेशा नाकाम रहेगी क्योंकि उसके दिए हुए जवाब हमेशा आधे-अधूरे ही रहेंगे, और इसी लिए सही नहीं होंगे| मद्रास, 22 अक्तूबर 1947
This catastrophic disaster has not come into being through some action of chance; it has been created by each one of us—by our everyday activities of envy and passion, of greed and the craving for power and domination, of competition and ruthlessness, of sensate and immediate values, We are responsible for this appalling misery and confusion not another but you and I. Because you are thoughtless, unaware, wrapped up in your ambitions, sensations and their pursuits, wrapped up in those values that are immediately gratifying, you have created this immense, engulfing disaster....You are responsible for this chaos, not any particular group, not any individual, but you. *Madras, 22 October 1947.*	यह भयानक मुसीबत यूँ ही कोई अचानक सामने नहीं आ गई; इसे हम सबने मिलकर पैदा किया है- ईर्ष्या और जनून से भरी रोज़ाना की अपनी गतिविधियों से, लोभ-लालच और सत्ता और दबदबे की लालसाओं से, मुकाबलेबाज़ी और बेरहमी के जरिए, इन्द्रियावी और तत्कालिक मूल्यों से| हम ही इस भयानक दुःख और उलझाव के लिए ज़िम्मेदार हैं, कोई दूसरा नहीं है, आप और मैं ही हैं| क्योंकि आप कुछ सोचते ही नहीं, एकदम बेहोशी में जीते चले जा रहे हैं, अपनी लालसाओं, इन्द्रियावी सनसनियों और उनके पीछे दौड़ने में लगे, सिर से पाँव तक ऐसे मूल्यों में लिपटे हुए जो तत्कालिक तौर पर तृप्ति देने वाले हैं, आप ही ने मुँह बाए खड़ी इस दैत्याकार मुसीबत को जन्म दिया है... किसी खास समूह ने, या किसी खास व्यक्ति ने नहीं, बल्कि आपने| मद्रास, 22 अक्तूबर 1947

Now, what is the modern world? The modern world is made up of technique and efficiency in mass organizations. There is an extraordinary advancement in technology and a maldistribution of mass needs; the means of production are in the hands of a few. There are conflicting nationalities, constantly recurring wars because of sovereign governments. That is the modern world, is it not? There is technical advancement without an equally vital psychological advancement, and so there is a state of unbalance; there are extraordinary scientific achievements, and at the same time human misery, empty hearts, and empty minds. Many of the techniques we have learnt have to do with building airplanes, killing each other, and so on. So, that is the modern world, which is *yourself*. The world is not different from you. Your world, which is yourself, is a world of the cultivated intellect and the empty heart. *New Delhi, 14 November 1948*.	अब, आज का यह संसार है क्या? आज का यह संसार तकनीकी और इन बड़ी-बड़ी संस्थाओं की काम करने की कुशलता से बना है| तकनीक के मामले में इन दिनों बहुत ज़बरदस्त तरक्की हुई है और साथ ही ज़रूरत की चीज़ों का गड़बड़ से भरा बंटवारा भी; पैदावार के साधन कुछ ही लोगों के हाथों में हैं, प्रभुसत्ता संपन्न सरकारों की वजह से हर तरफ़ युद्ध चल रहे हैं| यही आज का संसार है, है या नहीं? एक तरफ़ ज़बरदस्त तकनीकी विकास है लेकिन उसके बराबर मानसिक तरक्की नहीं हो पाई है, इसलिए एक असंतुलन की सी हालत है; एक तरफ़ गजब की वैज्ञानिक प्राप्तियां हैं, और मानवीय दुखों का अंबार है, लोगों के दिल और हाथ खाली हैं| बहुत सी तकनीकें जो हमने सीखी हैं, वह बस हवाई जहाज़ बनाने और एक-दूसरे को मारने काटने के लिए ही हैं| तो यही है आज का संसार, जो कि ख़ुद आप हैं| यह संसार कोई आपसे अलग नहीं है| आपका संसार, जो कि आप हैं, बहुत मशक्कत से विकसित की गई बौद्धिकता और सूने दिलों का संसार है| 14 नवंबर 1948, नई दिल्ली
The crisis is there. The crisis is not in the world, it is not the nuclear war, it is not the terrible divisions and the brutality that is going on. The crisis is in our consciousness, the crisis is what we are, what we have become. *Madras, 25 December 1982, Mind Without Measure.*	संकट बिलकुल सामने है| यह संकट कहीं संसार में नहीं है, यह परमाणु युद्ध का नहीं है, आसपास चल रही बेरहमी और बंटवारे में नहीं है| संकट हमारी चेतना में है, उसमे है जो हम हो गए हैं| 25 दिसंबर,1982, मद्रास, माइंड विदाउट मेझर
Why has man, who has lived for thousands and thousands of years, come to such misery and conflict?....If you put aside the easy explanations of over-population, lack of morality—which goes with technological knowledge and this lack of direct communication—what then is the fundamental reason, the fundamental cause of this misery? Why is it that in a country like this that has	आदमी जो हज़ारों-हज़ारों सालों से इस धरती पर है, क्यों वह ऐसे दुःख और टकराव में फँसा है? ...अगर हम बढ़ती हुई आबादी, नैतिकता की कमी--जो बढ़ते तकनीकी ज्ञान और सीधे संवाद में आती कमी के साथ-साथ चलते हैं--जैसी आसान सी व्याख्याओं को एक तरफ़ रख दें, तो फिर इस दुःख का बुनियादी कारण, इसकी मूलभूत वजह क्या है? तो फिर इस तरह के देश में जहाँ अच्छाई, दयालुता, हत्या ना करने, और बेरहम ना होने

had the tradition of goodness, kindliness, of not killing, of not being brutal—why is that something has gone totally wrong? *Bombay, 28, January 1968.*	जैसी परम्पराएं रही हैं--क्यों यहाँ पर एकदम सब ग़लत हो गया है? 28 जनवरी, 1968, बंबई
Because in the ancient days there were a group of people who were free from ambition and authority, from the bondages of greed and ill will, it helped to guide society away from spiritual and moral degradation. The larger the group, the greater the security of the society, of the State, and for this reason only one or two countries, like India, have survived. Because there are very few people who are not caught up in the turmoil of the world, you are in an extraordinary crisis. *Madras, 26 October 1947.*	पुराने दिनों में ऐसे लोगों का एक समूह था जो लालसा और सत्ता की चाह से मुक्त थे, लालच और वैर-भाव के बन्धनों से परे, वह समाज को रूहानी और नैतिक पतन से दूर रहने में मदद करते थे| ऐसे लोग जितने ज़्यादा होंगे, समाज और राज्य उतना ही ज़्यादा सुरक्षित होगा, और यही वजह है कि भारत जैसे सिर्फ एक या दो देश ही बचे रह पाए| क्योंकि बहुत थोड़े से लोग ही ऐसे हैं जो दुनिया के झमेलों में फँसे हुए नहीं हैं, इसलिए आप ऐसे अनोखे संकट में फँसे हैं| 26 अक्तूबर, 1947, मद्रास
There is the sorrow of disease, there is the sorrow that man feels in complete isolation. There is the sorrow of poverty when you see all these poor, ignorant, dirty, hopeless people. There is sorrow when you see all the animals of the world being killed, destroyed, butchered in laboratories. *Bombay, 28 January 1978.*	एक तरफ़ बीमारियों का दुःख है, इस बात का दुःख कि आदमी ख़ुद को बिलकुल अलग-थलग महसूस करता है| और फिर ग़रीबी का दुःख है, जब भी आप गंदगी में लिपटे हुए इन गरीब, हताश लोगों को देखते हैं| और फिर जब आप दुनिया भर के जानवरों को मारे जाते हुए, उनका कत्ल होते, और प्रयोगशालाओं में उन्हें सताए जाते हुए देखते हैं, तो उसका एक दुःख है| 28 जनवरी,1978, बंबई
It is odd that we have so little relationship with nature. We never seem to have a feeling for all the living things on the earth. If we could establish a deep, abiding relationship with nature, we would never kill an animal for our appetite; we would never harm, vivisect a monkey, a dog, a guinea pig for our benefit. We would find other ways to heal our wounds, heal our bodies. But the healing of the mind is something totally different. That healing gradually takes place if you are with nature.	बड़ी अजीब बात है कि कुदरत के साथ हमारा रिश्ता इतना नाम-मात्र का है| ऐसा कभी लगता ही नहीं कि धरती पर जीवित सभी चीज़ों के लिए हमारे अंदर कुछ भावना है| अगर हम कुदरत के साथ एक गहरा और स्थाई सबंध बना पाते हैं तो फिर हम अपनी भूख के लिए किसी जानवर को नहीं मारेंगे; अपने फायदे के लिए हम कभी किसी बंदर, कुत्ते या गिनी पिग की चीरफाड़ नहीं करेंगे| अपने ज़ख्मों के इलाज के लिए, अपने शरीरों को ठीक करने के लिए हम कोई दूसरे रास्ते खोजेंगे| लेकिन मन के घावों को भरना एक बिलकुल ही दूसरा

Krishnamurti to Himself, 25 February 1983.	मामला है| अगर आप कुदरत के साथ होते हैं तो वह घाव धीरे-धीरे भर जाते हैं| कृष्णमूर्ती टू हिमसेल्फ, 25 फ़रवरी,1983
When we lose contact with nature, we lose contact with each other. When you lose contact with the birds, the shy and timid quail, then you lose contact with your child and the person across the street. When you kill an animal to eat, you are also cultivating insensitivity which will kill that man across the border. When you lose contact with the enormous movement of life, you lose all relationship. Then you—the ego with all its fanciful urges, demands, and pursuits—become all-important, and the gulf between you and the world widens in endless conflicts. *The Whole Movement of Life is Learning: Letters to the Schools, Ch. 67.*	जब कुदरत से हमारा नाता टूट जाता है, तो हम आपस में भी एक दूसरे से अलग-थलग हो जाते हैं| जब पंछियों से, डरे से रहने वाले शर्मीले बटेरों से आपका नाता टूट जाता है, तब आप अपने बच्चे से और गली के उस पार वाले आदमी से भी अलग-थलग हो जाते हैं| जब आप खाने के लिए किसी जानवर को मारते हैं, तो आप उस संवेदनहीनता को बढ़ावा दे रहे होते हैं जो सरहद पार के उस आदमी को मारेगी| जब जीवन की इस विशाल लहर से आप कट जाते हैं तो आप सभी सबंधों से कट जाते हैं| तब आप- हवाई ख्वाहिशों, मांगों और दौड़-भाग से भरा अहंकार- यही सब कुछ हो जाते हैं, और आपके तथा दुनिया के बीच की खाई फैल कर अंतहीन टकरावों में बदल जाती है| द होल मूवमैंट आफ लाइफ़ इज़ लर्निंग: स्कूलों को लिखे पत्र, अध्याय 67
When you look around you, not so much in the human world as in nature, in the heavens, you see an extraordinary sense of order, balance, and harmony. Every tree and flower has its own order, its own beauty; every hilltop and every valley has a sense of its own rhythm and stability. Though man tries to control the rivers and pollutes their waters, they have their own flow, their own far-reaching movement. Apart from man, in the seas, in the air and the vast expanse of the heavens there is an extraordinary sense of purity and orderly existence. Though the fox kills the chicken, and the bigger animals live on the little animals, what appears to be cruelty is a design of order in this universe, except for man. When man doesn't interfere, there is great beauty of balance and harmony.	जब आप अपने चारों तरफ़ देखते हैं, आदमी के संसार में उतना नहीं जितना कि प्रकृति में, सितारों में, तो आपको एक अद्भुत्त व्यवस्था नज़र आती है, एक समतोल, और तालमेल | हर पौधे और हर फूल की अपनी ही व्यवस्था है, अपनी ही ख़ूबसूरती; हर चोटी और हर वादी का अपना ही एक लय है और स्थिरता भी| हालाँकि इंसाननदियों को रोकने की कोशिश करता है और उनके पानी खराब कर देता है, लेकिन उनका अपना बहाव है, दूर तक जाती उनकी धारा| आदमी को छोड़ कर, समुन्द्रों में, हवा में, दूर तक फैले हुए आकाश में, दिशायों में एक निराली पवित्रता है, एक लयबद्ध जीवन| हालाँकि लोमड़ी मुर्गों को मरती है, और बड़े जानवर छोटे जानवरों पर पलते हैं, जो देखने में बेरहमी है वह ब्रह्मांड की तालबद्धता का डिज़ायन है, सिर्फ आदमी को छोड़ कर| जब आदमी कोई दखल नहीं देता तो वहाँ गजब का संतुलन और एक सुन्दर तालमेल रहता है|

The Whole Movement of Life is Learning: Letters to the Schools, Ch. 70.	द होल मूवमैंट आफ लाइफ़ इज़ लर्निंग: स्कूलों को लिखे पत्र, अध्याय 70
Are we wasting our lives? By that word *wasting* we mean dissipating our energy in various ways, dissipating it in specialized professions. Are we wasting our whole existence, our life? If you are rich, you may say, 'Yes, I have accumulated a lot of money, it has been a great pleasure.' Or if you have a certain talent, that talent is a danger to a religious life. Talent is a gift, a faculty, an aptitude in a particular direction, which is specialization. Specialization is a fragmentary process. So you must ask yourself whether you are wasting your life. You may be rich, you may have all kinds of faculties, you may be a specialist, a great scientist or a businessman, but at the end of your life has all that been a waste? *Bombay, 10 February 1985, That Benediction is Where You are.*	क्या हम अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं? बर्बाद करने से मेरा मतलब है विभिन्न तरीकों से अपनी ऊर्जा को नष्ट करना, अलग-अलग धंधों में उसे गंवाना| क्या हम अपने पूरे जीवन को, अपने अस्तित्व को बरबाद कर रहे हैं? 'हाँ, मैंने बहुत दौलत जमा कर ली है, इसमें बहुत मज़ा है|' या अगर आप में कोई खूबी या हुनर है, वह खूबी एक धार्मिक जीवन के लिए खतरा है| यह हुनर एक उपहार है, एक क्षमता, किसी खास दिशा में हासिल एक कौशल, जो एक तरह की महारत है| महारत एक तरह की खंडित प्रक्रिया है| तो ज़रूर आपको अपने आप से यह पूछना चाहिए कि क्या आप अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं| आप अमीर हो सकते हैं, आपके पास हर तरह की योग्यताएं हो सकती हैं, आप किसी काम के माहिर हो सकते हैं, कोई महान वैज्ञानिक या एक कुशल व्यापारी, लेकिन आपके जीवन के अंत में क्या वह सब कुछ बेकार साबित हो रहा है? बंबई, 10 फ़रवरी,1985, दैट बैनिडिक्शन इज़ वेयर यु आर.
So, what is the meaning of all this existence? You may not want to look at it, you may want to avoid it....You give about twenty or thirty years to acquiring knowledge of physics, linguistics, biology, sociology, philosophy, psychoanalysis, psychiatry, and so on. You give years and years to it, and you don't give one day or even one hour to find out for yourself what you are and why you are living like this. *IIT-Bombay, 7 February 1984, Why are You being Educated?*	तो, इस सारे जीवन का अर्थ क्या है? हो सकता है कि आप इसे देखना ना चाहते हों, इससे बचना चाहते हों... आप अपने बीस-तीस साल भौतिक-शास्त्र, भाषाविज्ञान, जीव-विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविश्लेषण या मनोरोगों के अध्ययन में लगा सकते हैं| आप सालों-साल इसमें खर्च कर सकते हैं, और एक दिन या एक घंटा भर भी ख़ुद यह पता लगाने में नहीं लगाते कि आप क्या हैं और क्यों इस तरह से जीवन जी रहे हैं| 7 फ़रवरी 1984, वाए आर यू बीइन्ग एजुकेटड, आईआईटी--बंबई
Your culture says: 'Why bother about what the meaning of life is; just live, put up with the ugliness, the beastly existence, the sorrow, the pain, the	आपकी संस्कृति कहती है: 'जीवन के अर्थ क्या हैं इसकी परवाह क्यों करनी; सिर्फ जीओ, भद्दी और ज़िल्लत भरी ज़िन्दगी, दुःख, पीड़ा, चिंताएं, सुख, डर, बेइंतहा ऊब,

anxiety, the pleasures, the fears, the utter boredom, the loneliness; all that is part of your life. You cannot go beyond it; therefore enjoy, make pleasure the main thing of your life.' And that is what you are doing. *Saanen, 22 July 1973.*	अकेलापन; इस सब को निभाते चलें| आप इससे परे जा ही नहीं सकते; इसलिए बस मज़ा लो, मौज-मस्ती को ही जीवन का मकसद बना लो|' और यही तो आप कर रहे हैं| 22 जुलाई,1973, ज़ानेन
All over the world, human beings are degenerating to a greater or lesser extent. When pleasure, personal or collective, becomes the dominant interest in life—the pleasure of sex, the pleasure of asserting one's own will, the pleasure of excitement, the pleasure of self-interest, the pleasure of power and status, the insistent demand to have one's own pleasure fulfilled—there is degeneration. When human relationships become casual, based on pleasure, there is degeneration. When responsibility has totally lost its meaning, when there is no care for another or for the earth and the things of the sea, this disregard of heaven and earth is another form of degeneration. When there is hypocrisy in high places, when there is dishonesty in commerce, when lies are part of everyday speech, when there is the tyranny of the few, when only *things* predominate, there is the betrayal of all life. Then killing becomes the only language of life. When love is taken as pleasure, then human beings have cut themselves off from beauty and the sacredness of life....	दुनिया भर में मनुष्यों में गिरावट आती जा रही है, कहीं ज़्यादा तो कहीं थोड़ा कम| जब सुख-भोग, निजी हों या सामूहिक, ही जीवन में सब कुछ बन कर रह जाएं- काम वासना के सुख, अपनी मर्जी को थोपने का सुख, उत्तेजना का सुख, स्वार्थ का सुख, सत्ता और पोजीशन का सुख, अपने सुखों की पूर्ति की निरंतर माँग- तो गिरावट तय है| जब मानवीय रिश्ते शर्तों पर टिके हों, अस्थिर हो जाएं, सुख-भोगों पर आश्रित, तो गिरावट तय है| जब ज़िम्मेदारी के कोई अर्थ ना रह जाएं, जब दूसरों की कोई परवाह ना हो, ना धरती की ना समुंदर के जगत की, धरती और आसमान की यह उपेक्षा उस पतन का ही रूप है| जब (समाज के) ऊँचे स्थानों में पाखंड छा जाए, व्यापार में जब बेईमानी हो, झूठ जब हमारी आम बातों का हिस्सा हो जाए, जब कुछ लोगों के ज़ुल्म का बोलबाला हो, जब हर तरफ़ वस्तुएं ही छाई हों, तो यह सारे जीवन के साथ विश्वासघात है| तब मारो-मारो ही जीवन की एकमात्र भाषा रह जाती है| जब प्यार को सुख-भोग के रूप में लिया जाता है, तब मनुष्य ख़ुद को जीवन की सुंदरता से, उसकी पवित्रता-पावनता से काट लेते हैं...
When pleasure becomes dominant in our lives, relationship is exploited for this purpose, and so there is no actual relationship with another. Then relationship becomes merchandise. The urge for fulfilment is based on pleasure, and when that pleasure is denied or has not found means of expression, then there is anger, cynicism, hatred or bitterness. This incessant pursuit of	जब सुखों का भोग ही जीवन में सब कुछ हो जाए, संबंधों को बस इसी मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाए, तो एक-दूसरे से कोई असल संबंध रह ही नहीं जाते| तब रिश्ते बेचने-खरीदने की चीज़ हो जाते हैं| जब तृप्ति या संतोष सुख-भोग पर ही टिका हो, और जब कभी सुख हासिल ना हो पाए या उसे पूरा करने के कोई साधन ना मिलें, तब एक कड़वाहट पैदा होती है, गुस्सा आता है, सनकीपन और नफ़रत| सुखभोग की यह निरंतर

pleasure is actually insanity. *The Whole Movement of Life is Learning, Ch. 28.*	दौड़ असल में पागलपन ही है| द होल मूवमैंट आफ लाइफ़ इज़ लर्निंग, अध्याय 28
Why is man caught in sensate pleasure?....It has become a burning issue because it is stimulated by every possible means in modern society. Newspapers, cinema, and magazines stimulate eroticism. Advertisements, to attract your attention, use the picture of a woman. Outward and inward stimulation is being encouraged, is sedulously cultivated. The present society is essentially the outcome of sensate values. Things, power, position, name and class have become of vital significance. Sensory values have become predominantly significant in your lives....Your lives are hollow, empty, a routine of earning money, playing cards, going to the cinema, and the reading of books. *Bombay, 15 February 1948.*	क्यों आदमी ऐंद्रिय सुख में फँस कर रह गया है? ...यह एक ज्वलंत मुद्दा बन गया है क्योंकि आज के समाज में हर संभव तरीके से इसको हवा दी जा रही है| अख़बार, सिनेमा और मैगजीन सब कामुकता को हवा देते हैं| इश्तहारों में आपका ध्यान खींचने के लिए औरत की तस्वीरें लगाई जाती हैं| अंदरूनी और बाहरी उद्दीपन को बढ़ावा दिया जाता है, बड़े जतन के साथ उसे बुना जाता है| मौजूदा समाज बुनियादी तौर पर ऐंद्रिय मूल्यों की ही उपज है| चीज़ें, सत्ता, ओहदे, नाम और श्रेणी ही यहाँ सब कुछ है| इंद्रियजन्य मूल्यों की ही आपके जीवन में प्रमुख अर्थवत्ता रह गयी है... आपके जीवन खोखले हैं, खाली, पैसा कमाने की रोज़ की दौड़ है, ताश खेलना, सिनेमा जाना, और किताबें पढ़ लेना, बस यही सब| 15 फ़रवरी, 1948, बंबई
The rich want to forget themselves in night-clubs, in amusements, in cars, in travelling. The clever ones want to forget themselves, so they begin to invent, to have extraordinary beliefs. The stupid ones want to forget themselves, and so they follow people, they have gurus who tell them what to do. The ambitious ones also want to forget themselves in doing something. So all of us, as we mature, as we grow older, want to forget ourselves. *Varanasi, 22 January 1954, Leaving School, Entering Life.*	अमीर लोग ख़ुद को नाइट क्लबों में भुला देना चाहते हैं, तरह-तरह के मनोरंजन में, बड़ी-बड़ी गाड़ियों और सैर-सपाटे में| चतुर-चालाक लोग ख़ुद को भुलाना चाहते हैं, इसलिए वो नई-नई चीज़ें गढने लगते हैं, अनोखे और निराले विश्वास| मूर्ख भी ख़ुद को भुलाना चाहते हैं, इसके लिए वे दूसरों के पीछे हो लेते हैं, गुरूओं के पीछे जो उन्हें बताते हैं कि क्या करना है| महत्त्वाकांक्षी लोग भी कुछ-न-कुछ करते रहने में ख़ुद को भुला देना चाहते हैं| सो हम सभी, ज्यूँ-ज्यूँ उम्र पकती जाती है, जैसे-जैसे बड़े होते हैं हम, ख़ुद को भुलाते रहना चाहते हैं| 22 जनवरी,1954, लीविंग स्कूल, एंट्रिंग लाईफ़
A restless mind must have a changing variety of expressions and actions. It must be filled or occupied; it must have ever-increasing sensations, passing interests; and gossip contains all these elements. Concern over the affairs of	एक बेचैन मन को अभिव्यक्तियों में, कर्म में एक बदलती जाती विविधता की दरकार होती है| उसे किसी न किसी काम में लगे रहना होता है, हमेशा व्यस्त; उसे संवेदनों की, सनसनी की खुराक चाहिए, हमेशा बढ़ती मात्रा में, तुरत-फुरत बदलती रहने वाली रुचियां; और

others seems to occupy most people. This concern shows itself in the reading of innumerable magazines and newspapers with their gossip columns, their accounts of murder, divorces, and so on. Thus we become more and more externalized and inwardly empty. The more externalized we are, the more sensations and distractions there must be. Modern existence encourages this superficial activity and distraction. Most people are afraid to be quiet and unoccupied. *Commentaries on Living I, Ch. 3.*	गपशप में यह सारी चीज़ें होती हैं| ज़्यादातर लोगों को दूसरों के मामले की ही लगी रहती है| ि ज त्र स व ढेरों अखबार और पत्रिकाएं पढ़ा करते हैं, उनके चटपटे कॉलम, कितने कत्ल हुए, कितने तलाक़, उस सब में वही सारे सरोकार झलकते हैं| इस तरह हम ज़्यादा और ज़्यादा बाहर की तरफ़ झुकते चले जाते हैं और अंदर से खोखले होते जाते हैं| जितना हम बाहर की तरफ़ झुकते हैं, उतनी ही ज़्यादा सनसनी और भटकाव की हमें ज़रूरत लगती है| आधुनिक जीवन ऐसी सतही गतिविधियों और भटकावों को हवा देता है| ज़्यादातर लोग मौन और खाली रहने से डरते हैं| कोमंट्रीज़ ऑन लिविंग 1, अध्याय 3
We don't seem to pay much attention to the future. You see on television endless entertainment from morning until late in the night. The children are entertained. The commercials all sustain the feeling that you are being entertained. And this is happening practically all over the world. What will be the future of these children? There is the entertainment of sport—thirty, forty thousand people watching a few people in the arena and shouting themselves hoarse....Watching all this in different parts of the world, watching the mind being occupied with amusement, entertainment, sport, if one is in any way concerned one must inevitably ask what the future is. More of the same in different forms? A variety of amusements?	लगता नहीं कि हम भविष्य की तरफ़ कुछ खास ध्यान दे रहे हैं| टेलिविज़न पर आप सुबह से देर रात तक मनोरंजन ही मनोरंजन देखते हैं| बच्चों का मनोरंजन किया जाता है| इश्तहारों में भी इस बात का ख्याल रखा जाता है कि आपका मनोरंजन हो पाए| और यही दुनिया भर में हो रहा है| इन बच्चों का भविष्य क्या होगा? एक मनोरंजन खेलों का है- तीस-चालीस हज़ार लोग कुछ लोगों को मैदान में देख रहे हैं और गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहे हैं... दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में यही सब देखते हुए, यह देखते हुए कि कैसे मन खेलों में, बहलाव और मनोरंजन में लगा हुआ है, अगर हमारा थोडा भी सरोकार इस सबसे हो तो यह सवाल उठता ही है कि भविष्य क्या है| वही बात बस बदले हुए रूपों में? मन बहलाव के नए-नए तरीके?
So you have to consider how the worlds of entertainment and sport are capturing your mind, shaping your life. Where is all this leading to? Or perhaps you are not concerned at all? You probably don't care about tomorrow. Probably you haven't given it thought, or, if you have, you may say it is too complex, too frightening, too dangerous to think of the coming years—not of	तो आपको यह देखना होगा कि कैसे मनोरंजन और खेलों की दुनिया आपके दिलो-दिमाग पर कब्जा कर रही है, आपके जीवन को ढाल रही है| यह सब किस तरफ़ ले कर जा रहा है? या फिर आपको इसकी कोई परवाह ही नहीं है? आपको शायद भविष्य की कोई चिंता ही नहीं| या फिर आपने इसके बारे में सोचा ही नहीं, या यह आपको बहुत ज़्यादा पेचीदा लगता है, बहुत डराने वाला, आने वाले दिनों के बारे में सोचना बहुत डराता है- आपके

your particular old age but of the destiny, if we can use that word, the result of our present way of life, filled with all kinds of romantic, emotional, sentimental feelings and pursuits, and the whole world of entertainment impinging on your mind. If you are at all aware of all this, what is the future of mankind?	अपने बुढ़ापे के बारे में नहीं बल्कि नियति के बारे में, अगर हम इस शब्द को यहाँ ला पाएं, जीने के हमारे मौजूदा ढंग-तरीकों का परिणाम, जो हर तरह की रूमानी, भावुक, जज़बाती भावनाओं और दौड़ों से भरा है, मनोरंजन की पूरी दुनिया जो आपके दिमागों पर छा रही है| अगर आप इसके बारे में जरा भी सजग हैं, तो फिर आदमी का भविष्य क्या है?
When the entertainment industry takes over, as it is gradually doing now, when the young people, the students, the children, are constantly instigated to pleasure, to fancy, to romantic sensuality, the words *restraint* and *austerity* are pushed away, never even given a thought....You probably won't even listen to what the implications of austerity are. When you have been brought up from childhood to amuse yourself and to escape from yourself through entertainment—religious or otherwise—and when most of the psychologists say that you must express everything you feel and that any form of holding back or restraint is detrimental, leading to various forms of neuroticism, you naturally enter more and more into the world of sport, amusement, entertainment, all helping you to escape from what you are. *Krishnamurti to Himself, 18 March 1983.*	जब मनोरंजन का व्यापार हर चीज़ पर छा जाएगा, जैसा कि धीरे-धीरे यह करता जा रहा है, जब नौजवानों को, विद्यार्थियों और बच्चों को लगातार सुख और मजे के पीछे, रोमांटिक कामुकता और कल्पनाओं के पीछे दौड़ने को उकसाया जा रहा है, जब संयम और सादगी जैसे शब्द पीछे धकेले जा रहे हैं, कभी उनके बारे में सोचा भी नहीं जाता...आप शायद यह सुनना भी नहीं चाहते कि सादगी या आत्मसंयम के मतलब क्या हैं| जब बचपन से ही आपको ऐसे पाला-पोसा जाता है कि ख़ुद को बहलाना कैसे है और कैसे मनोरंजन के जरिए ख़ुद से भागना है- वह मनोरंजन धार्मिक किस्म का हो या किसी और तरह का- और जब ज़्यादातर मनोवैज्ञानिक यही कहते हों कि आपको हर चीज़ व्यक्त कर देनी चाहिए, जो भी आप महसूस करते हों, और किसी भी चीज़ को भीतर रोकना या संयम रखना नुकसानदायक है, जो तरह-तरह के मनोरोगों की तरफ़ ले जा सकता है, तो आप स्वभाविक ही ज़्यादा ही ज़्यादा खेलों, मन बहलाव और मनोरंजन की दुनिया में खोते चले जाते हैं, यह सारा कुछ आपको उससे दूर ले जाने में मदद करता है जो आप हैं| कृष्णमूर्ती टू हिमसेल्फ़, 18 मार्च 1983
With the development of robot, man will only have perhaps two hours of work a day. This may be going to happen within the foreseeable future. Then what will man do? Is he going to be absorbed in the field of entertainment?....Or is he going to turn inwardly, which is not an entertainment but something which demands great capacity of observation, examination,	रोबोट के विकास के बाद आदमी को शायद दिन में सिर्फ दो घण्टे ही काम करने की ज़रूरत पड़ेगी| यह बहुत जल्द होने वाला है, बिलकुल निकट भविष्य में| फिर आदमी क्या करेगा? क्या वह मनोरंजन में डूब कर रह जाएगा? ...या फिर वह भीतर की तरफ़ पलटेगा, जो कि कोई मनोरंजन नहीं है बल्कि उसके लिए तो बहुत गौर से देखने और जांच-पड़ताल की ज़रूरत पड़ती है, एक

and non-personal perception? These are the two possibilities. *Saanen, 21 July 1981, The Network of Thought.*	ऐसा बोध जो व्यक्तिगत नहीं| यही दो सम्भावनाएं हैं| ज़ानेन, 21 जुलाई 1981, द नैटवर्क आफ थॉट
You are encased in your own capacities and gifts, and they are dangerous friends. They become the end in themselves and lead to much misery and sorrow. Your food, your clothes, your postures, and your pleasures are making you weary and dull; your mind is becoming insensitive and losing its quickness of understanding....If you become aware of the many activities of the superficial mind, watch its chatterings, its dances, its reasons, conclusions, through this awareness there comes peace and clarity. This may mean that you may have to abandon your comfortable surroundings, your enervating, mechanical thoughts, the mode of your present life. Deep disturbances are necessary for clarity and understanding. *The World Within, Ch.75.*	आप अपनी ही योग्यताओं और खूबियों में कैद हैं, और वे खतरनाक दोस्त हैं| वह अपने आप में ही एक निशाना बन जाते हैं और बहुत मुसीबतों और दुखों की तरफ़ ले जाते हैं| आपका खाना, कपड़े, उठने बैठने के आपके ढंग, और आपके सुख आपको ढीला और सुस्त बना रहे हैं; आपका मन असंवेदनशील होता जा रहा है और समझने बूझने की अपनी फुर्ती को गंवाता जा रहा है| ...अगर आप सतही मन में चलने वाली अनेकों गतिविधियों के बारे में सजग हो जाते हैं, उसकी बकबक को देखते हैं, उसकी उछल-कूद, दलीलबाजी, और उसके निष्कर्ष, इस जागरूकता से शांति और स्पष्टता आती है| इसके चलते आपको अपने आरामदायक माहौल, मशीनी सोच, और जीने के आपके मौजूदा ढंग जो आपको ढीला बनाता है, को छोड़ना पड़ सकता है| स्पष्टता और समझ के लिए तमाम गहरे खलल और व्यवधान ज़रूरी हैं| द वर्ल्ड विद इन, अध्याय 75
If you are not suffering, if you are not in conflict, if there is no problem, no crisis in your life, then there is very little to be said. That is, if you are asleep, then the action of life must first awaken you. But what happens generally when you begin to suffer? You immediately seek a remedy that will ease your suffering. So gradually in your search for comfort, you again put yourself to sleep through your own effort....When the mind is awakened through a shock, which you call suffering, that is the true moment to inquire into the cause of suffering, without seeking comfort. *Montevideo, 26 June 1935.*	अगर आप पीड़ा में नहीं हैं, अगर आपके भीतर टकराव नहीं हैं, अगर कोई समस्या ही नहीं, जीवन में कोई परेशानी ही नहीं, तो फिर कहने को बचता ही क्या है| यानि कि अगर आप सोए हुए हैं तो जीवन के बहाव को पहले आपको जगाना होगा| लेकिन जब आपको पीड़ा होने लगती है तो फिर आम तौर पर होता क्या है? आप एकदम से कोई इलाज ढूंढते हैं जिससे आपकी पीड़ा शांत हो| सो आराम को ढूंढते-ढूंढते धीरे-धीरे आप ख़ुद को फिर से सुला देते हैं, ख़ुद अपनी ही कोशिशों से| जब मन को कोई झटका लगता है और वह जाग जाता है, झटका, जिसे आप पीड़ा कहते हैं, यही असल घड़ी है पीड़ा के कारणों की खोज-बीन की, बिना किसी आराम की तलाश के| मोंटी वीडियो, 26 जून, 1935

Therefore the important thing...is self-knowledge. Without understanding oneself, there cannot be order in the world; without exploring the whole process of thought, feeling, and action in oneself, there cannot possibly be world peace, order, and security. Therefore the study of oneself is of primary importance, and it is not a process of escape.	इसलिए ज़रूरी बात तो है... ख़ुद को जानना| बिना ख़ुद को जाने, संसार में व्यवस्था नहीं आ सकती; सोच, भावनाएं और जो भी अपने भीतर चलता है, उस सारे कुछ की छान-बीन किए बिना, संसार में अमन, व्यवस्था और सुरक्षा का कायम हो पाना एक तरह से असंभव ही है| इसलिए ख़ुद का अध्ययन करना ज़रूरी है, और यह कोई बच कर भागने का तरीका नहीं है|
This study of oneself is not mere inaction. On the contrary, it requires an extraordinary awareness in everything that one does, an awareness in which there is no judgement, no condemnation or blame. This awareness of the total process of oneself as one lives in daily life is not narrowing, but ever-expanding, ever-clarifying; and out of this awareness comes order, first in oneself and then externally in one's relationships. *Poona, 19 September 1948.*	ख़ुद का यह अध्ययन कोई निठल्लापन या आलस्य नहीं है| बल्कि इसके लिए तो उल्टा बहुत ही गजब की सजगता चाहिए, हर उस चीज़ के प्रति जो हम करते हैं, एक ऐसी जागरूकता जिसमे कोई फ़ैसला नहीं है, कोई निंदा-आलोचना या दोष लगाना नहीं| अपने रोज़ाना जीवन की हर चीज़ के बारे में पूरी तरह सजग होना, यह कोई सिकुड़ने वाली बात नहीं है, बल्कि खुलते और खिलते जाना है, निरंतर स्पष्ट होते जाना; और व्यवस्था इसी सजगता से आती है, पहले अपने आप में और फिर बाहर अपने सबंधों में| 19 सितंबर, 1948, पूना
If you are unconscious of the conflict, that is, the battle that is taking place between the self and the environment, if you are unconscious of that battle, then why do you seek further remedies? Remain unconscious. Let the conditions themselves produce the necessary conflict without your rushing after, invoking artificially, falsely, a conflict which does not exist in your mind and heart. And you create artificially a conflict because you are afraid that you are missing something. Life will not miss you. *Ojai, 18 June 1934.*	अगर आप उस टकराव के प्रति अचेत हैं जो आप के और माहौल के बीच में चला रहा है, अगर आप उस जंग के प्रति बेहोश हैं, तो फिर आपको किसी इलाज की ज़रूरत क्या है? तो बेहोश रहें| हालातों को ख़ुद ही वह टकराव पैदा करने दें जो ज़रूरी है, आपको उसके पीछे भागने की, झूठ-मूठ या बनावटी तरीकों से ऐसा कोई टकराव खड़ा करने की ज़रूरत नहीं है जो आपके दिलो-दिमाग में नहीं है| आप ज़बरदस्ती एक टकराव खड़ा करते हैं क्योंकि आपको लगता है कि आप कुछ खो रहे हैं| जीवन आपको अछूता नहीं छोड़ेगा| ओहाई, 18 June 1934
When you close the doors and windows of the house and live inside, you feel safe, secure, unmolested. But life is not	जब आप घर के दरवाज़े, खिड़कियाँ बंद करके अंदर बैठ जाते हैं, आपको लगता है अब सब ठीक है, कोई खतरा

like that. Life is constantly knocking on the door, trying to push the windows open all the time so that you may see more, but if there is fear and you close all the windows, the knocking grows louder. So the more outward securities you cling to, the more life comes and pushes you. *Varanasi, 16 December 1952.*	नहीं, एकदम सुरक्षित| लेकिन जीवन ऐसा नहीं है| जीवन लगातार दरवाज़ा खटखटाता है, हर वक्त खिड़की खोलने की कोशिश में रहता है ताकि आप कुछ और भी देख सकें, लेकिन अगर आप डरे हुए हैं और सभी खिड़कियाँ आपने बंद कर ली हैं, तो खटखटाहट तेज होती जाती है| सो जितना ज़्यादा आप बाहरी सुरक्षा से चिपकते हैं, उतना ही जीवन आपको और जोर से धक्का देता है| 16 दिसंबर, 1952, वाराणसी
So, what will make you change? A crisis? A knock on the head? Sorrow? Tears? All that has happened—crisis after crisis. You have shed tears endlessly, and nothing seems to change you because you are relying on somebody else to do the job: your Masters, your gurus, your books, your professors, the clever, cunning people who have new theories, all that. Nobody says, 'I am going to find out.' *Madras, 29 December 1979, The Seed of a Million Years.*	सो, कौन सी चीज़ है जो आपकों बदलेगी? कोई संकट? सिर पर पड़ी कोई मुसीबत? दुःख? आँसू? यह सब तो हो चुका है-एक के बाद एक मुसीबत| बेहिसाब आँसू आप बहा चुके हैं, कोई चीज़ आपको बदलती नज़र नहीं आती क्योंकि आपको लगता है कि कोई दूसरा आपके लिए यह करेगा : आपके गुरू, आपके स्वामी, आपकी किताबें, या आपके प्रोफैसर, जो बहुत चतुर और होशियार आदमी हैं जिनके पास नए नए सिद्धांत हैं| कोई यह नहीं कहता, 'मैं इसका पता लगाऊंगा|' मद्रास, 29 दिसंबर 1979, दा सीड आफ़ मिलीयन यीअर्स
What have you done with your life?...You have had this life, this extraordinary thing called life, in which there is sorrow, pleasure, fear, guilt, and all the tortures and the loneliness and the despair of life, and the beauty of life. You have had it, and what have you done with it? When you ask it, don't go to bed with sorrow, because you have done nothing, you have done absolutely nothing. A life was given to you, the most precious thing in the world, and what have you done? Distorted it, tortured it, torn it to pieces, divided it, brought about violence, destruction, hatred, without love, without compassion, without passion. So when you ask that question what you have done with your life, inevitably you will have tears in your eyes. But you will	आपने अपनी ज़िन्दगी को क्या बना लिया है? ... आपको यह ज़िन्दगी मिली है, यह अद्भुत्त शै जिसका नाम ज़िन्दगी है, जिसमें दुःख है, खुशियाँ हैं, डर, अपराध बोध, जीवन की सारी तकलीफ़ें, अकेलापन और निराशा, और जीवन की खूबसूरती| आपके पास यह सब था, और आपने इसके साथ क्या कर डाला है? जब आप अपने आप से यह पूछते हैं, तो रात भर आप उस पर दुःख नहीं मनाते रहें, क्योंकि आपने कुछ नहीं किया, बिलकुल कुछ नहीं| एक जीवन आपको दिया गया, संसार की सबसे कीमती चीज़, और आपने उसका क्या किया? उसे तरोड़-मरोड़ दिया, खराब कर दिया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया, बाँट दिया, उसमें हिंसा और तबाही भर दी, नफरत, जहाँ ना कोई प्यार है, ना हमदर्दी, ना ही जोश और जज़्बा| तो जब आप यह सवाल पूछते हैं कि आपने अपने जीवन का क्या किया, तो बरबस आपकी आँखें भर आती हैं|

have tears because you are thinking of the past, of what you might have done: tears of self-pity. *Bombay, 14 December 1969.*	लेकिन यह आँसू इसलिए हैं क्योंकि आप अतीत के बारे में सोचते हैं, उसके बारे में जो आप कर सकते थे: ख़ुद पर तरस खाने वाले आँसू| 14 दिसंबर, 1969, बंबई
Cheer and happiness are not ends in themselves; they are, as courage and hope, incidents in the search of something that is an end in itself. It is this end that must be sought after patiently and diligently, and the only through its discovery will our turmoil and pain cease. The journey towards its discovery lies through oneself; every other journey is a distraction leading to ignorance and illusion. The journey within oneself must be undertaken not for a result, not to solve conflict and sorrow; for the search itself is devotion, inspiration. *Ojai, 17 June 1945.*	खुशियाँ और प्रसन्नता अपने आपमें मकसद नहीं हैं; हिम्मत और उम्मीद की तरह वह भी किसी ऐसी चीज़ की तलाश में हैं जो अपने आप में मंिज ह यही वह मंज़िल है जिसकी तरफ़ बड़े धीरज और मेहनत के साथ आगे बढ़ना है, सिर्फ इस खोज से ही हमारी अशांति और तकलीफ़ों का अंत होगा| इस खोज का रास्ता ख़ुद अपने में से ही हो कर जाता है; दूसरा कोई भी रास्ता भटकाव है जो अज्ञानता और भ्रम की तरफ़ ले जाता है| अपने भीतर की यह यात्रा किसी नतीजे तक पहुँचने के लिए नहीं है; दुखों और टकराव के समाधान के लिए नहीं है, क्योंकि खोज अपने आप में ही लगन है, प्रेरणा है| ओहाई, 17 जून 1945
We are one humanity; the earth is ours to share, and with loving care it will produce food, clothing, and shelter for us all. So the function of education is not merely to prepare you to pass a few examinations, but to help you understand this whole problem of living....It is also our problem to find out what God is because that is the very foundation of our life. A house cannot stand for long without a proper foundation, and all the cunning inventions of man will be meaningless if we are not seeking out what is God or truth. *Think on These Things, Ch. 26.*	हम एक ही मानवता हैं; यह धरती हम सब लोगों के लिए है, और प्यार के साथ इसकी संभाल करते हैं तो यह हम सबको खाना, कपड़ा और रिहायश देती है| तो शिक्षा का काम सिर्फ आपको इम्तिहान पास करने के लिए तैयार करना नहीं है, बल्कि इस सारे जीवन को समझने में आपकी मदद करना है| ...यह पता लगाना भी हमारा काम है कि ईश्वर क्या है, क्योंकि वही हमारे जीवन की बुनियाद है| एक ठोस आधार के बिना कोई मकान ज़्यादा देर तक टिक नहीं सकता, और अगर हम सत्य या ईश्वर की खोज नहीं करते तो आदमी की चतुराई भरी यह तमाम खोजें अर्थहीन हो जाएंगी| थिंक ऑन दीज़ थिंग्स, अध्याय 26
Building civilizations that come toppling down in a few centuries, bringing about wars, creating God in one's own image, killing people in the name of religion or the State, talking of peace and brotherhood while usurping power and	ऐसी सभ्यताओं का निर्माण जो कुछ ही सदियों में ढेरी हो जाएंगी, युद्धों को न्यौता देना, ईश्वर को ख़ुद अपनी छवि में ढालना, राज्य और धर्म के नाम पर लोगों को मारना, अमन और भाईचारे की बातें करते हुए सत्ता को

being ruthless to others—this is what man is doing all around. And is this the true work of man?....Surely the true work of man is to discover truth, God; it is to love and not to be caught in his own self-enclosing activities. In the very discovery of what is true, there is love, and that love in man's relationship with man will create a different civilization, a new world. *Think on These Things, Ch. 17.*	हड़पने में लगे रहना और दूसरों के लिए कठोर और बेरहम बने रहना- यही तो है जो आदमी हर तरफ़ कर रहा है| और क्या यही आदमी का असल काम है? जाहिर है कि आदमी का असल काम तो ईश्वर की, सत्य की खोज है; यानि कि प्रेम करना और ख़ुद अपनी ही बनाई हुई गतिविधियों में, जो कि ख़ुद ही सीमित हैं, फंसने से बचना| और सच्चाई की इस खोज में ही, प्रेम उभरता है, और इन्सानी रिश्तों के बीच का यह प्यार ही एक अलग तरह की सभ्यता को जन्म देगा, एक नए संसार को| थिंक ऑन दीज़ थिंग्स, अध्याय 17
The truly religious person is not concerned with reform, he is not concerned with merely producing a change in the social order; on the contrary, he is seeking what is true, and that very search has a transforming effect on society. That is why education must be principally concerned with helping the student to seek out truth or God, and not merely preparing him to fit into the pattern of a given society. *Think on These Things, Ch. 27.*	असल धार्मिक आदमी सुधारों की चिंता नहीं करता, उसका सरोकार सिर्फ सामाजिक व्यवस्था में सुधार लाने से नहीं है; बल्कि वह तो इस तलाश में है कि सच्चाई क्या है, और वही तलाश फिर समाज पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव डालती है| इसीलिए यह ज़रूरी है कि सैद्धांतिक तौर पर शिक्षा का सरोकार इस बात से हो कि कैसे वह सच्चाई और ईश्वर की खोज में विद्यार्थियों के लिए मददगार साबित हो, उसका काम सिर्फ उन्हें मौजूदा समाज के ढाँचे में फिट होने के लिए तैयार करना नहीं है| थिंक ऑन दीज़ थिंग्स, अध्याय 27
One has to find that which is eternally, incorruptibly sacred. And that can only come when there is compassion; which means when you have understood the whole significance of suffering—suffering not only of yourself, but the suffering of the world. The suffering of the world is truth; it is there. It is not a sentimental, romantic fluttering of thought. It is actually there, as in us. And to live with that suffering, go to its very end without escaping from it. When you don't escape, you have tremendous energy to meet it. Then only you go beyond it....Compassion comes only when you have understood the whole meaning of suffering, and no longer suffer. It is only	उसे खोजना है जो हमेशा-हमेशा से पवित्र है, िजसभ्रष्ट किया नहीं जा सकता| और वह तभी सामने आ सकता है जब दयालुता होती है; यानि जब आप दुःख के सारे मामले को, उसके मायनों को समझ लेते हैं-सिर्फ अपने ही नहीं, बल्कि संसार भर के दुःख को| संसार का दुःख एक सच्चाई है; वह तो सामने है| यह कोई सोच की जज़बाती या रोमानी फड़फड़ाहट नहीं है| यह असल में मौजूद है, जैसे कि हम में है| और उस दुःख के साथ जीने के लिए, उसकी तह तक जाओ, बिना उससे बचने की कोशिश किए| जब आप भागते नहीं, तो आपके पास उसका सामना करने के लिए ज़बरदस्त ऊर्जा होती है| तभी आप उससे पार जा सकते हैं| दयालुता तभी हो सकती है जब आप दुख के सारे अर्थ को समझ चुके होते हैं, और अब दुखी नहीं होते| सिर्फ दया से भरा हुआ मन

the compassionate mind that can meditate and find that which is eternally sacred. *Saanen, 3 August 1975.*	ही ध्यान में हो सकता है, और उसे पा सकता है, जो सदा से पवित्र है| ज़ानेन, 3 अगस्त, 1975.
The search for God, for truth, the feeling of being completely good—not the cultivation of goodness, of humility, but the seeking out of something beyond the inventions and tricks of the mind, which means having a feeling for that something, living in it, being it—*that* is true religion. But you can do that only when you leave the pool you have dug for yourself and go out into the river of life. Then life has an astonishing way of taking care of you because then there is no taking care on your part. Life carries you where it will because you are part of itself; then there is no problem of security. *Think on These Things, Ch. 17.*	ईश्वर की खोज, सच्चाई की खोज, पूरी तरह से शुभ होने का अहसास--अच्छाई या विनम्रता को तराशना नहीं है, लेकिन किसी ऐसी चीज़ की तलाश जो मन की खोजी चीज़ों और चालबाज़ियों से परे है, जिसका मतलब है कि उसके लिए कुछ अहसास, वह जो कि कुछ है, उसी में जीना, वही होना--यही असल धर्म है| लेकिन यह आप तभी कर सकते हैं जब आप उस तालाब से बाहर आ जाएं जो आपने अपने लिए खोदा है और जीवन की नदी तक पहुँच जाएं| फिर जीवन अद्भुत, विस्मयकारी तरीके से आपकी देखभाल करता है क्योंकि फिर अपनी देखभाल करने की बात नहीं रहती| फिर जीवन आपको जहाँ वो चाहे ले जाता है क्योंकि आप उसी का हिस्सा हैं; फिर सुरक्षा की कोई समस्या नहीं रहती| थिंक ऑन दीज़ थिंग्स, अध्याय 17
In seeking the Real, bread will be supplied; but if we seek only bread, then even that will be destroyed. Bread is not the ultimate value; when we make of it into the ultimate, there is disaster, there is murder, there is starvation. Through the transient seek the eternal. There is no path to it, for it is the ever-present. *The World Within, Ch. 76.*	अगर आप सच्चाई की तलाश में हैं, तो आपको रोटी की मुश्किल नहीं होगी; लेकिन अगर हम सिर्फ रोटी के पीछे भागते हैं, तो फिर वह भी खटाई में पड़ जाएगी| रोज़ी-रोटी ही अपने आपमें अंतिम मूल्य नहीं है; जब हम उसी को आखिरी मान लेते हैं, उसी में बरबादी है, वहीँ खून-खराबा है, वहीँ भुखमरी है| हम अस्थाई के जरिए अविनाशी तक पहुँचना चाहते हैं| उसके लिए कोई मार्ग नहीं है, क्योंकि वह तो सदा मौजूद है| द वर्ल्ड विद इन, अध्याय 76
There is only Reality, the supreme without a second. There is only one humanity and one righteousness, and the way to its realization does not lie through any other path, through any other person save through yourself. Seek your own deliverance, and then you will deliver the world from its confusion and conflict, its sorrow and	केवल एक ही सच्चाई है, परम, उसके अलावा कोई दूसरा नहीं| सिर्फ एक ही मानवता है और एक ही सदाचार| और उसे महसूस करने का रास्ता सिवाए आपके किसे दूसरे से हो कर नहीं जाता| सिर्फ अपनी मुक्ति को ही तलाशें, तभी आप संसार को उसके भ्रम और टकराव, उसके दुखों और वैर विरोधों से मुक्त कर पाएंगे|

antagonism. *The World Within, Ch. 19.*	द वर्ल्ड विद इन, अध्याय 19
You raised a question: what is sacred? Without finding that, without coming upon it—not *you* finding it—without that coming into being, you cannot have a new culture, you cannot have a new human quality. *Rishi Valley, 16 December 1984.*	आपने एक सवाल उठाया है कि पवित्र, पावन क्या है? उसका पता लगाए बगैर, उस तक पहुँचे बिना- ऐसा नहीं कि आपको उसे पाना है- उसके प्रकट हुए बिना, आप नए सभ्याचार का निर्माण नहीं कर सकते, नई मानवीय गुणवत्ता को हासिल नहीं कर सकते| 16 दिसंबर, 1984, ऋषि वैली
You must be your own light....There is no hope in the things made by the hand or by the mind. We are not escaping; we are pointing out that any activity on the edge of the precipice can only precipitate the fall, and there is safety and happiness only away from the precipice. The few who realize this must form centres of enlightenment, away from the abyss. There is a way out of our present crisis and from all human problems—a way that is not an escape, a way that leads to eternal bliss. *Madras, 22 October 1947.*	आपको अपनी रोशनी ख़ुद बनना होगा| ... हाथ की या मन की बनाई हुई चीज़ों से कोई उम्मीद नहीं है| हम भाग नहीं रहे हैं; हम सिर्फ़ इतना ही इशारा कर रहे हैं कि खाई के किनारे खड़े हो कर हम कुछ भी करें उससे गिरने का खतरा और बढ़ ही सकता है, उसमे और तेजी ही आ सकती है, सुरक्षा और ख़ुशी सिर्फ खाई से दूर हटने में ही है| थोड़े से लोग जो इसे महसूस करते हैं, उन्हें इस खाई से परे बोध के केन्द्र बनाने होंगे| मौजूदा संकट और सारी मानवीय समस्याओं से उभरने का एक रास्ता है--कोई भागने या पलायन का रास्ता नहीं, रास्ता जो सनातन आनंद की तरफ़ ले जाता है| मद्रास, 22 अक्तूबर 1947

-----*-----